आबू पर्वत, ज्ञानसरोवर,२४ मई २०१४। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं इसकी भगिनी संस्था आर ई आर एफ के प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में देश तथा नेपाल के विभिन्न हिस्सों से अनेक प्रशासनिक पदाधिकारियों ने भाग लिया। सम्मेलन का विषय था, 'पहल दिल से। पधारे हुए अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ तथा गीत संगीत के द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलित करके इसका उद्घाटन संपन्न हुआ।

इस प्रभाग की अध्यक्षा तथा सम्मेलन की अध्यक्षता कर रही राजयोगिनी ब्र.कु.आशा दीदी जी ने अपने आर्शीवचन इन शब्दों में दिये। आपने कहा कि दिल की बात को सदैव सुनना चाहिये। हम जानते नहीं कि हम आत्मा हैं जो कि परमात्मा की संतान है। विभिन्न दायरे में अपने आप को कैद करते करते हमने अपना वास्तविक वजूद खो दिया है। एक दूसरे को समझने की क्षमता दिल की विशेषता है। दिमाग से हम सीमित रह जाते हैं। दिल की मदद से हम अनेक कार्य सफलता पूर्वक कर पाते हैं। शुद्ध भावनाओं से एक दूसरे को देखना सफलता की पहली शर्त है। सफलता के लिये हमें अपना सांसारिक नजरिया बदलना होगा। गल्तियाँ हमारे विवेक को खाती रहती हैं। अपने जीवन को सफल करने के लिये दिल की मदद आवश्यक है। कल्याणकारी प्रशासन का आधार अनुशासन है। अर्थात अनु समान आत्मा की समझ एवं तदनुरूप आचरण ही श्रेष्ठ जीवन बनाने की कला सिखलाता है। सफलता के लिये ओनली लव ही कारगर है। यह एक उच्चतम लॉ है। इसे अपने जीवन में अपना कर देखिये। आप स्वयं जान जाएंगे।

राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग के अध्यक्ष एवं प्यूरिटी नामक मासिक पत्रिका के संपादक तथा ब्रह्माकुमारीज संस्थान के प्रमुख सचिव राजयोगी ब्र.कु.बृज मोहन जी ने प्रमुख वक्ता के रूप में आज के सम्मेलन को संबोधित किया। आपने कहा कि अगर दिल और दिमाग का मुकाबला हो तो क्या हो? दिमाग ने आण्विक शस्त्र उत्पन्न किये हैं जबकि दिल ने इसके प्रयोग का प्रतिरोध किया है। दिमाग प्रश्न करता जाता है जबकि दिल इनका प्रेम पूर्ण उत्तर देता है। दिमाग की वजह से अहं की उत्पत्ति होती है जबकि दिल इनको नापंसद करता है। दिल संभालता है जबकि दिमाग इसकी परवा नहीं करता। दिमाग नियम कानून की बातें करता है जबकि दिल प्रेम की बात मानता है। अर्थात लव और लॉ का बैलेंस रखना जरूरी है। मॉ बाप अगर बच्चे से सारा दिन लाड़ ही लगाते रहेंगे तो बात बिगड़ जाएगी। अर्थात दोनों का संतुलन जरूरी है। तभी काम बनेगा। तभी बच्चे का विकास होगा। दिल शोषक नहीं बन सकता जबकि दिमाग शोषण करने की भी सोचता है। अर्थात यदि दिमाग दिल के अधीन कर दी जाए तो मामला उत्तम बन सकता है। दिल की कशिश के आगे दिमाग खिंचा चला आता है। अर्थात यह मार्ग ठीक है प्रशासनिक पहल के लिये। इसमें सबका कल्याण समाया हुआ है।

राज्य निर्वाचन आयोग दिल्ली के चुनाव आयुक्त राकेश मेहता ने सम्मेलन को अपनी शुभकामनाएं दीं। आपने कहा कि आज का विषय,'पहल दिल से, काफी महत्वपूर्ण है। प्रशासन का काम काफी महत्वपूर्ण होता है। किसी बात को लागू करना बड़ी बात होती है। अगर विश्वसनीयाता की कमी हो तो सफलता संदेहास्पद हो जाती है। और विश्वसनीयता की कमी तो है ही आज की तारीख में। इस विश्वसनीयता को बनाये रखने के लिये कौन कौन से मार्ग होने चाहिये? सख्ती से काम चलने वाला नहीं है, यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। ब्रह्माकुमारीज के संपर्क में आने पर मैंने जाना कि सख्ती के बजाय प्रेम का प्रयोग काफी कारगर होता है। प्रेम से सहयोग मिलता है सभी का। काम में सफलता मिल जाती है। अर्थात स्वपरिवर्तन से काम बनता है। स्वयं को प्रेमपूर्ण बनाना ही समस्या का समाधान है। प्रेमपूर्ण बनिये और सफलता को पाइये।

जन प्रशासन मंत्रालय नेपाल के संयुक्त सचिव सूर्य प्रसाद शर्मा जी ने अपनी शुभकामनाएं सभी को दीं। आपने कहा कि यहाँ मैं काफी आनंद की अवस्था में हूँ। यहाँ की कार्यप्रणाली सर्वोत्तम है। सब कुछ काफी सुंदर है। नेपाली कहावत हैः प्रेम से बनाई गई रोटी काफी स्वादिष्ट होती है। यहाँ इनका सारा कार्य प्रेम के आधार पर ही चलता है। प्रेम से किया गया सारा काम सफल होगा। प्रेम को अपनाइये और सफलता पाइये। मैं ऐसे सुंदर कार्यक्रम के आयोजन के लिए संस्थान का अभिवादन करता हूँ। नेपाल भारत मैत्री सदा अमर रहे। सभी को साधुवाद।

लखनऊ से पधारे समाज कल्याण आयुक्त भाई राकेश मित्तल जी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मेलन को संबोधित किया। आपने कहा कि आबू पर्वत पर आना हमेशा पुनर्जीवन पाने जैसा होता है। मुझे इसकी अच्छी खासी अनुभूति है। सम्मेलन का विषय काफी सुंदर है। दुनियाँ में आध्यात्म एवं धर्म की मदद से ही शांति की स्थापना हो सकती है, ऐसा दुनियॉ का मानना है। प्रशासन का चेहरा मानवीय कैसे बने? इसके लिये इस संस्थान की शिक्षाएं चाहिये। ब्रह्माकुमारियों की शिक्षा तार्किक है और इसकी जरूरत है सभी प्रशासकों को। जैसा करोगे वैसा पाओगे। यह सही है। प्रेम के आधार पर किया गया कार्य स्वच्छ होता है और सफलता मिलती है। आपने अपने जीवन से जुड़ीं अनेक बातें बताईं और प्रतिपादित किया कि दिल के फैसले हमेशा ही अच्छे होते हैं और श्रेष्ठ होते हैं।

उड़ीसा से पधारे उत्पाद आयुक्त अशोक कुमार तरेनियाँ ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने उद्गार प्रकट किये। आपने कहा कि इस ईश्वरीय स्थल पर आने की प्रेरणा मुझे अपने सहयोगियों से मिली। मैं जान रहा हूँ कि अब मेरे जीवन की दिशा सकारात्मक रूप से बदलने जा रही है। मैं गहराई से अभिभूत हूँ यहाँ आने के बाद। एक ईमानदार प्रशासक अच्छा कार्य कर सकता है। मैं यहाँ सीखने आया हूँ। काफी कुछ सीख कर जाना चाहता हूँ। मुझे सफलता मिलेगी इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

प्रशासक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.हरीश भाई ने सम्मेलन में पधारे हुए सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया और कहा कि आप सभी का अनेकानेक स्वागत तो है ही मगर सबसे पहले हमें परमपिता परमात्मा शिव बाबा एवं परमात्मा के मानवीय माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का स्वागत करना है। इनकी कृपा से ही हम ऐसा कार्यक्रम कर पाते हैं।

इस प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजक ब्रह्माकुमारी प्रेम बहन ने राजयोग का अभ्यास करा कर गहन शांति की अनुभूति करवाई। इसी प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजक ब्र.कु.नेहा बहन ने कार्यक्रम का संचालन किया।*(रपट : वी के गिरीश, ज्ञानसरोवर)*